Publication: Rajasthan Patrika	**Date:** 24.11.2022
Edition: Jaipur	**Page No:** 08
Authors: Dr. Swati Piramal	
Headline: Let's set our sights on ensuring every Indian is able to see clearly	

स्वास्थ्य : एक विकसित राष्ट्र का सपना तब तक साकार नहीं होगा, जब तक कि सभी भारतीय स्पष्ट रूप से नहीं देख लेते

आंखों से जुड़े रोगों के उपचार को मिले प्राथमिकता

डॉ. स्वाति पीरामल
समाज कल्याण से जुड़े पीरामल फाउंडेशन की अध्यक्ष, वैज्ञानिक व उद्यमी
@patrika.com

भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है। शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण छलांग लगाते हुए भारत में अब साक्षरता दर 77 प्रतिशत है, जो 1951 में केवल 18 प्रतिशत थी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी परिणाम समकालीन देशों की तुलना में बेहतर नहीं तो ठीक-ठीक पाए गए हैं। इसके बावजूद स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी कुछ किया जाना है। वैश्विक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के परामर्श से एस्सिलोर लक्सोटिका द्वारा प्रकाशित 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानित 55 करोड़ भारतीयों को यह सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है कि वे स्पष्ट रूप से देखें और अपनी सर्वश्रेष्ठ सही दृष्टि प्राप्त करें। 2020 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अनुमान लगाया कि उनमें से 27 करोड़ लोगों में दृष्टि हानि के मध्यम से गंभीर स्तर हैं, जिनमें से 9.2 लाख अंधे थे। इस तरह के हालात सिर्फ भारत में नहीं हैं।

एस्सिलोर लक्सोटिका की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में 2.7 बिलियन लोगों, यानी हर 3 लोगों में से 1 के पास अब भी ऐसी खराब दृष्टि है, जिसे एक साधारण जोड़ी के चश्मे के माध्यम से ठीक किया जा सकता है। यह एक ऐसी संख्या है जिसे कम करने के लिए हम सभी को प्रतिबद्ध होना चाहिए। आखिरकार, खराब दृष्टि ऐसी समस्या है, जिसका समाधान किया जा सकता है। एक साधारण चश्मे से और सरकार की इच्छा से इस समस्या पर काबू पाया जा सकता है। भारत के खराब दृष्टि संकट के मुख्य कारणों में नेत्र देखभाल प्रदाताओं तक पहुंच की कमी, किफायती उत्पादों की अनुपलब्धता, जागरूकता की कमी और लंबे समय से चली आ रही सामाजिक वर्जनाएं भी शामिल हैं।

एक विकसित राष्ट्र का सपना तब तक साकार नहीं होगा, जब तक कि सभी भारतीय स्पष्ट रूप से नहीं देख लेते और अपनी वास्तविक क्षमता का एहसास नहीं कर लेते। स्वास्थ्य संबंधी दूसरे कारकों की तुलना में खराब दृष्टि हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। आज, तीन बच्चों में से एक को दृष्टि संबंधी कोई ऐसी समस्या है, जिससे सीखने की प्रवृत्ति प्रभावित हो सकती है। भारत में छियालीस प्रतिशत ड्राइवर जिन्हें एक जोड़ी चश्मे की आवश्यकता है, वे बिना चश्मे के गाड़ी चला रहे हैं। ये अच्छी दृष्टि रखने वाले ड्राइवरों की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक दुर्घटना भागीदारी दर में योगदान करते हैं। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि खराब दृष्टि श्रमिकों की उत्पादकता, लिंग समानता और बुजुर्गों की उम्र के अनुसार उनकी स्वतंत्रता में एक अभिन्न भूमिका निभाती है। यह स्पष्ट है कि अच्छी दृष्टि को प्राथमिकता देने के लिए पूरे समाज के दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, यदि हम खराब दृष्टि में सुधार करते हैं, तो इसके परिणामस्वरूप स्कूल के प्रदर्शन में सुधार होता है, क्योंकि जो बच्चे अच्छी तरह से देख सकते हैं, वे अच्छी तरह से सीख सकते हैं। इस तरह हम एक समस्या के समाधान पर फोकस करके दो समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। यदि हम ड्राइवरों और सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए दृष्टि में सुधार करते हैं, तो हम एक ही समय में सड़क दुर्घटनाओं और सड़क पर होने वाली मौतों को कम करके सड़क सुरक्षा में सुधार कर सकते हैं।

एक देश के रूप में, हमने पहले भी इस तरह की चुनौतियों का सामूहिक रूप से सामना किया है और हम सफल हुए हैं। हम निश्चित रूप से सुधार योग्य खराब दृष्टि की चुनौती का सामना कर सकते हैं।

विडंबना यह है कि वैश्विक स्वास्थ्य एजेंडे में खराब दृष्टि के मुद्दे को कम प्रमुखता दी गई है। हां, एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है जो भारत के लिए इस मुद्दे से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मंच तैयार करता है। 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्वसम्मति से आंखों की देखभाल के लिए वैश्विक पहुंच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से दृष्टि पर अपने पहले प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। यह संकल्प संगठन के 193 सदस्य देशों, जिनमें से भारत एक हिस्सा है, को अपनी आबादी के लिए दृष्टि देखभाल तक पहुंच प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध करता है। एक देश के रूप में, हमने पहले भी इस तरह की चुनौतियों का सामूहिक रूप से सामना किया है और हम सफल हुए हैं। हम निश्चित रूप से सुधार योग्य खराब दृष्टि की चुनौती का सामना कर सकते हैं, जिसके लिए देश में वहनीय और सुलभ समाधान मौजूद हैं।

भारत में खराब दृष्टि के मुद्दे को हल करने के लिए कई प्रभावशाली कार्यक्रम बनाए जा सकते हैं। स्किल इंडिया और नेशनल स्किल डवलपमेंट कॉरपोरेशन के बीच साझेदारी का लाभ उठाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक सरकारी कार्यक्रम में चश्मे वितरित करने का प्रावधान है। निजी क्षेत्र और परोपकारी संस्थाओं के साथ मिलकर काम करते हुए, हम इस सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट को हल करने के लिए कुल अनुमानित लागत को प्रभावी ढंग से कम कर सकते हैं। निस्संदेह, भारत ने खराब दृष्टि से निपटने के लिए काम शुरू कर दिया है। आशा है कि सभी के लिए विजन का संकल्प पूरा करने में भारत आगे रहेगा।

इस क्यूआर कोड को स्कैन कर आप आलेख सुन भी सकते हैं।

Eye Care: Healthcare in India is weak as compared to other countries

1947 में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक ऐसा भाषण दिया था, जिसने देश की दिशा और दिशा बदलकर रख दी थी। उन्होंने भाषण में एक नवस्वतंत्र भारत को यह याद रखने की चुनौती दी थी और कहा था कि इतिहास में कभी कभार ही एक पल आता है, जब हम पुराने विचारों से बाहर निकलकर नए युग की ओर कदम बढ़ाते हैं। पिछले 75 वर्षों में भारत ने कई चुनौतियों का सामना किया है। देश ने पिछले सात से अधिक दशकों में महत्वपूर्ण आर्थिक विकास देखा है। वास्तव में, इस साल भारत की अर्थव्यवस्था के 3.53 ट्रिलियन डॉलर का अनुमान है, जो दुनिया की टॉप पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में पहुंच सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण छलांग लगाते हुए भारत में अब साक्षरता दर 77 प्रतिशत है, जो 1951 में केवल 18 प्रतिशत थी। स्वास्थ्य सेवा में, परिणाम समकालीन देशों की तुलना में बेहतर नहीं तो तुलनीय पाए गए हैं, जबकि प्रति रोगी कम खर्च भी करते हैं।

वैश्विक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के परामर्श से EssilorLuxottica द्वारा प्रकाशित 2019 की रिपोर्ट के अनुसार अनुमानित 55 करोड़ भारतीयों को यह सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है कि वे स्पष्ट रूप से देखें और अपनी सर्वश्रेष्ठ सही दृष्टि प्राप्त करें। 2020 में, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने

अन◌ुम◌ान लग◌ाया दक उनम◌े◌ं स◌े 27 करहड लहगह◌ं म◌े◌ं द◌ृद्दष्ट ह◌ादन के मध्यम स◌े ग◌ंभीर स्तर ह◌ै◌ं, दजनम◌े◌ं स◌े 9.2 लाख अ◌ंध◌े थ◌े। व◌ास्तव म◌े◌ं, भ◌ारत उन श◌ीष 10 ि◌◌े शह◌ं म◌े◌ं न◌ंबर 1 पर ह◌ै, दजनक◌ी आब◌ाि◌◌ी म◌े◌ं सबस◌े बड◌ी आब◌ाि◌◌ी दबना खर◌ाब द◌ृद्दष्ट वाल◌े लहगह◌ं क◌ी ह◌ै। य◌े ऐस◌े म◌ुद्द◌े ह◌ै◌ं दजन◌्◌े◌ं एक साध◌ारण चश्म◌े स◌े और अदधवक्त◌ाओ◌ं और सरक◌ार क◌ी इच्छ◌ा स◌े ठ◌ीक दकय◌ा जा सकत◌ा ह◌ै। भारत के खर◌ाब द◌ृद्दष्ट स◌ंकर के म◌ुख्य क◌ारणह◌ं म◌े◌ं न◌ेत्र ि◌◌े खभ◌ाल प्रि◌◌ाताओ◌ं तक पहंच की कमी, दकफायती उत्पाि◌हं की उपलब्धता, जागरूकता की कमी और लंबे समय से चली आ रही सामादजकवजनाएं श◌ादमल ह◌ै◌ं। एक दवकद्सत राष्ट्र क◌ा सपन◌ा तब तक स◌ाक◌ार नह◌ी◌ं हहग◌ा जब तक दक सभ◌ी भ◌ारत◌ीय स्पष्ट रूप से नह◌ी◌ं ि◌◌े ख ल◌े त◌े और अपन◌ी वास्तदवक क्षमत◌ा क◌ा एहसास नह◌ी◌ं कर ल◌े त◌े।

दपरामल फ◌ाउ◌ं ड◌े शन क◌ी डॉ. स्वादत ए. दपरामल क◌ा कहन◌ा ह◌ै दक स्वास्थ्य स◌ंब◌ंध◌ी प्रभावह◌ं के ब◌ावज◌ूि◌, खराब द◌ृद्दष्ट हमार◌े जीवन के सभी पहल◌ुओ◌ं म◌े◌ं महत्वप◌ूण भ◌ूदमक◌ा दनभाती ह◌ै। आज, त◌ीन बच◌्ह◌ं म◌े◌ं स◌े एक कह द◌ृद्दष्ट स◌ंब◌ंध◌ी कहई ऐस◌ी समस्य◌ा है दजस◌े ठ◌ीक नह◌ी◌ं दकय◌ा गय◌ा ह◌ै, जह सीखन◌े कह प्रभादवत कर सकत◌ी ह◌ै। भारत म◌े◌ं 46 प्रदतशत ड◌ाइवर दजन◌्◌े◌ं एक जहड◌ी चश्म◌े क◌ी आवश्यकत◌ा हहती ह◌ै, व◌े दबना चश्म◌े के ग◌ाड◌ी चला रह◌े ह◌ै◌ं, जह अच्छ◌ी द◌ृद्दष्ट रखन◌े वाल◌े ड◌ाइवरह◌ं क◌ी त◌ुलन◌ा म◌े◌ं 30 फ◌ीसि◌◌ी अदधक ि◌◌ुर◌्रन◌ा भाग◌ीि◌◌ारी ि◌र म◌े◌ं यहग ि◌◌ान करत◌े ह◌ै◌ं। अध्ययनह◌ं स◌े यह भी पत◌ा चलत◌ा ह◌ै दक खराब द◌ृद्दष्ट श्रदमकह◌ं की उत्प◌ाि◌कत◌ा, समानत◌ा और ब◌ुज◌ुग◌ो◌ं क◌ी उम्र के अन◌ुसार उनक◌ी स्वत◌ंत्रत◌ा म◌े◌ं एक अदभन्न भ◌ूदमक◌ा दनभ◌ाती ह◌ै। यह स्पष्ट है दक सावजदनक स्वास्थ्य च◌ुनौत◌ी के रूप म◌े◌ं खराब द◌ृद्दष्ट श◌ून्य म◌े◌ं मौज◌ूि◌ नह◌ी◌ं ह◌ै और अच्छ◌ी द◌ृद्दष्ट कह प्र◌ाथदमकत◌ा ि◌◌े न◌े के दलए प◌ूर◌े समाज के द◌ृद्दष्टकहण क◌ी आवश्यकत◌ा हहग◌ी।

वनसाइर एस्सिलहर लक्सहदरक◌ा फ◌ाउ◌ं ड◌े शन के अन◌ुराग ह◌ंस क◌ा कहन◌ा ह◌ै दक ह◌ाल के दिनह◌ं म◌े◌ं व◌ैद्दि◌क स्वास्थ्य एज◌े◌ंड◌े म◌े◌ं खराब द◌ृद्दष्ट प्रम◌ुख रह◌ी ह◌ै, एक महत्वप◌ूण पररवतन हआ ह◌ै जह भारत के दलए इस म◌ुद्द◌े स◌े अदधक प्रभावी ढ◌ंग स◌े दनपरन◌े के

दलए म◌ंच त◌ैयार करत◌ा ह◌ै। 2021 म◌े◌ं स◌ंय◌ुक्त र◌ाष्ट्र मह◌ासभा न◌े सवसम्मदत स◌े आ◌ंखह◌ं क◌ी ि◌◌े खभाल के दलए व◌ैद्दि◌क पह◌ंच स◌ुदनद्दि◌त करन◌े के उद्द◌ेश्य स◌े द◌ृद्दष्ट पर अपन◌े पहल◌े प्रस्ताव कह म◌ंज◌ूरी ि◌◌ी। यह स◌ंकल्प स◌ंगठन के 193 सि◌स्य ि◌◌े शह◌ं दजनम◌े◌ं स◌े भारत एक दह ि◌◌ा ह◌ै, कह अपन◌ी आब◌ाि◌◌ी के दलए द◌ृद्दष्ट ि◌◌े खभाल तक पह◌ंच प्रि◌◌ान करन◌े के दलए प्रदतबद्ध करत◌ा ह◌ै।